International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

# उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में चीनी उद्योग का योगदान

**डॉ.अमित कुमार**
अस्सिटेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश।

**सारांश –** भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्यतया कृषि पर आधारित है। भारत देश विभिन्न प्रदेशों एवं सघंशासित प्रदेशों में बंटा है जिससे शासन व्यवस्था सुदृढ़ रहे। उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था एवं राजनीति में चीनी उद्योग की एक बहुत बड़ी भूमिका है, उत्तर प्रदेश के राजस्व में राज्य की चीनी मिलें अपना अमूल्य योगदान देती है। उत्तर–प्रदेश के लगभग 28 जनपद चीनी उद्योग एवं इससे सम्बन्धित विभिन्न लघु उद्योगों से जुड़े हुये हैं। इन जनपदों में चीनी उद्योग के लिये आवश्यक कच्चे माल की उपलब्धता प्रचुर मात्रा में है। चीनी उद्योग के विकास के लिये समय–समय पर प्रदेश एवं केन्द्र सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की सरकारी नीतियों की घोषणा होती रही है। विभिन्न सरकारी नीतियों की समीक्षा के बाद इनमें सुधार भी होते रहे हैं।

**मुख्य शब्द**– उद्योग, नीतियां, विकास, उत्पादन, आर्थिक, विपणन, सरंक्षण।

उत्तर प्रदेश गन्ना उत्पादन एवं चीनी उत्पादन के क्षेत्र में भारत का एक अग्रणी प्रदेश है। इस प्रदेश की जलवायु गन्ना उत्पादन के अनुकूल है। पश्चिमी एवं पूर्वी उत्तर–प्रदेश के कृषकों की आर्थिक स्थिति का मुख्य आधार गन्ना उत्पादन ही है। यहाँ पर रहने वाले अधिकांश कृषक इस फसल का ही उत्पादन करते हैं। इसका मुख्य कारण यह फसल नगदी फसल के रूप में जानी जाती है। इस फसल के उत्पादन से कृषकों को दोहरा लाभ है। फसल बिक्री से आर्थिक लाभ के साथ वृर्ष के कई महीनों तक पशुओं को चारा भी उपलब्ध होता रहता है। यहाँ पर गन्ने का रकबा अधिक है। आज पश्चिमी एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश चीनी मिलों की अधिकता का यही मुख्य कारण है। यहाँ चीनी मिलों को कच्चा माल उपलब्ध हो जाता है। आज उत्तर प्रदेश में 158 चीनी मिले चीनी उत्पादन कार्य में लगी हुई हैं।

वर्तमान एवं पिछली सरकारों की दुर्भाग्यपूर्ण चीनी नीति के कारण इस उद्योग को नुकसान पहुँचा है। सरकार सहकारी चीनी मिलों को सरकार औने–पौने दामों पर बेच रही है। सरकार की साँठ–गाँठ के चलते उद्योगपति एवं पूंजीपति इन मिलों को खरीदकर लाभ कमा रहे हैं। निजी क्षेत्र की चीनी मिलें गन्ना उत्पादक किसानों का शोषण कर रही हैं। गन्ना उत्पादक कृषकों को अपनी फसल का भुगतान भी समय से नहीं मिल पा रहा है। शोध अध्ययन में पता चला है कि उत्तर प्रदेश की चाहे सरकारी चीनी मिलें हो अथवा निजी क्षेत्र के सभी पर आज करोड़ों रूपये कृषकों का बकाया है। प्रदेश के हाईकोर्ट एवं सरकार के विभिन्न आदेशों को यह चीनी मिल मालिक मान नहीं रहे हैं। आज भी इनको अपनी उपज का भुगतान नहीं मिल पा रहा है।

गन्ना उत्पादक कृषकों एवं चीनी मिल मालिकों की विभिन्न समस्याओं का सामना करना होता है। समय रहते उन समस्याओं को हल कर लिया जाए तो यह उद्योग राज्य की अर्थव्यवस्था में मील का पत्थर साबित होगा। उत्तर प्रदेश में चीनी उद्योग की गणना एक प्रमुख उद्योग के रूप में की जाती है। विभिन्न औद्योगिक नीतियों का प्रभाव इस उद्योग पर भी पर्याप्त रूप से पड़ा है। इस उद्योग ने भी उत्तर प्रदेश के विकास में अपनी भूमिका निभाई है या हम कह सकते हैं कि उत्तर प्रदेश के विकास में इस उद्योग की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। इस उद्योग को लगाते समय या स्थापित करते समय सरकार से इस बात का समझौता होता है कि यह अपने क्षेत्र में आने वाले ग्रामीण क्षेत्र का सुनिश्चित करेंगे। यह क्षेत्र में सम्पर्क मार्गों, सड़कों, अस्पताल एवं स्कूलों का निर्माण करायेंगे। यही कारण है कि आज भी सरकार ने इस उद्योग को पूर्ण रूपेण स्वतन्त्र नहीं किया है। इस उद्योग पर प्रदेश सरकार के साथ–साथ केन्द्र सरकार का नियन्त्रण आज भी जारी है। उद्योग स्थापित करने के लिये विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। यदि राज्य सरकार चीनी उद्योग को अधिक रियायत प्रदान करें साथ ही उनकों विस्तृत बाजार प्रदान करें तो राज्य सरकार को और अधिक राजस्व की प्राप्ति हो सकती है। विगत कुछ वर्षो में सहकारी एवं निजी क्षेत्र की चीनी मिलों ने उत्पादन में तीव्र गति से वृद्धि की है किन्तु तुलनात्मक रूप में उसका उपभोग व निर्यात कम है जिस कारण चीनी मिलों के भण्डार बढ़ रहे है, अतः इस चीनी के भण्डारण व विपणन की उचित व्यवस्था की जानी आवश्यक है।

## चीनी उद्योग का मूल्यांकन :–

यद्यपि उदारीकरण के बाद से ही भारतीय उद्योग नीति मे व्यापक परिवर्तन आया है। अब यह माना जाने लगा है कि बिना व्यापक औद्योगिकरण के आर्थिक विकास सम्भव नहीं है। भारत में विकराल रूप में बढ़ती जनसंख्या के कारण विकास कार्य अवरूद्ध हो रहे हैं। जनसंख्या आधिक्य की समस्या के चलते सभी विकास कार्य बौने साबित हो रहे हैं। इसलिये कृषि पर जनसंख्या का दबाब कम करने की योजना बनाई गई है। विकास की वृद्धि दर बढ़ाने के लिये औद्योगिकरण की प्रक्रिया तो तेज करने की रणनीति बनाई गई है। इस रणनीति के सकारात्मक प्रभाव दिखाई पड़ने लगे हैं। जैसा कि सरकारी आँकड़े प्रदर्शित कर रहे हैं, उत्तर प्रदेश में गरीबी रेखा के स्तर में कमी आई है किन्तु तकनीकी ज्ञान की कमी के चलते औद्योगिकरण का लाभ कुछ लोग ही उठा पा रहे हैं। बाकी अकुशल श्रमिकों की स्थिति जस की तस बनी हुई है जिसकी तरफ ध्यान देना आवश्यक है।

उत्तर–प्रदेश की अर्थव्यवस्था आज भी कृषि पर आधारित है। इसका मुख्य कारण यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के 60 वर्षों के बाद भी यहाँ पर औद्योगिकरण के अनुकूल वातावरण नहीं बन पा रहा है। यहाँ पर कृषि की स्थिति भी संतोषजनक नहीं कही जा सकती है। चीनी उद्योगों को संरक्षण के बिना उत्तर प्रदेश में कृषि की स्थिति को नहीं सुधारा जा सकता है। वैसे भी विकसित तथा अल्पविकसित अर्थव्यवस्था में कृषि की कुछ विशेष प्रकार की समस्यायें होती हैं। चीनी उद्योग पूर्णरूपेण कृषि से जुड़ा उद्योग है अर्थात् जब तक कृषि एवं कृषकों की दशा नहीं सुधारी जाती तब तक हम कह सकते हैं कि चीनी उद्योग की समस्याओं का अन्त नहीं किया जा सकता है।

भारत में आज भी कृषि को संरक्षण की आवश्यकता है। पिछड़ी अर्थव्यवस्था में कृषि को ऊपरी धक्के की आवश्यकता होती है इसलिये नहीं कि जो लोग कृषि में कार्यरत हैं उनको अच्छा खाना तथा कपड़ा प्राप्त हो बल्कि इसलिये कि

पिछड़ी अर्थव्यवस्था का प्रारम्भिक विकास सामान्यतः कृषि के विकास से ही प्रारम्भ होता है। चीनी उद्योग के विकास के लिये कृषि विकास अत्यन्त ही आवश्यक है। आज वर्तमान में उत्तर प्रदेश में चीनी उद्योग संकट के दौर से गुजर रहा है। इसका प्रमुख कारण चीनी का अधिक उत्पादन प्रमुख है। आज विश्व भर की आबादी के लिये जितनी चीनी की आवश्यकता है उससे अधिक उत्पादन हो रहा है। यही प्रमुख कारण है कि इस उद्योग को इस कारण से मंदी के दौर से गुजरना पड़ रहा है।

भारतवर्ष में विशेषकर उत्तर प्रदेश में आज भी परम्परागत कृषि ही अपनाई जा रही है। परंपरिक अर्थव्यवस्था का कृषि पर महत्वपूर्ण अंश होता है। सामन्तवाद से पूंजीवाद की ओर रूपान्तरण से अभिप्राय है कृषि का हस्तान्तरण। किसी भी अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास के लिये कृषि का विकास एक अनिवार्य पूर्व निर्धारित शर्त है। लेकिन उत्तर–प्रदेश में कृषि विकास की तरफ पर्याप्त ध्यान हीं दिया गया है। आजादी के 67 वर्षों के बाद भी उत्तर–प्रदेश ने विकास की रफ्तार नहीं पकड़ी है। चीनी उद्योग के विकास एवं विस्तार के लिये यह आवश्यक है कि गन्ना उत्पादक किसानों को उनकी फसल का भुगतान सुविधापूर्वक होना सुनिश्चित किया जाये। आज उत्तर प्रदेश सरकार के तमाम प्रयासों के बाद भी कृषकों को अपनी उपज का मूल्य प्राप्त नहीं हो पा रहा है। गन्ना उत्पादक कृषक आन्दोलन के लिये बाध्य है। जिस देश या प्रदेश का किसान अपनी उपज का मूल्य प्राप्त करने के लिये संघर्ष करेगा तो वहा खुशहाली की अपेक्षा करना बेईमानी है। श्रमिक संघ अनावश्यक हस्तक्षेप करते हैं जिससे उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

उत्तर प्रदेश औद्योगिक क्षेत्र में आज भी काफी पिछड़ा हुआ है चाहे वह कोई भी उद्योग क्यों न हों। उद्योगपति आज भी यहाँ पर उद्योग लगाने में कतराते हैं। यहाँ पर उद्योगों के विकास के आवश्यक आधारभूत सुविधाओं की विशेष कमी है जिनमें से आधुनिक तकनीकों का विकास, बिजली की नियमित आपूर्ति इत्यादि। यद्यपि उद्योगों के प्रोत्साहन सरकार द्वारा औद्योगिक नीति की घोषणा पूर्व उद्योग मंत्री श्री पी.जे.कुरियन द्वारा 24 जुलाई 1991 में की गई थी। इस उद्योग नीति का चीनी उद्योग पर भी काफी प्रभाव पड़ा। सन् 1991 में उदारीकरण की प्रकिया प्रारम्भ होने से उद्योग के विकास पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है। इस उद्योग नीति के माध्यम से सरकार ने घोषणा की, कि उद्योग के विकास के लिये हर सम्भव प्रयास किये जायेंगें। सरकार प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के प्रयास करती रहेगी। इस नीति के माध्यम से एकाधिकार की स्थिति को समाप्त करने का प्रयास किया जायेगा जिससे कि वह शोषण न कर सकें।

सरकार ने औद्योगिक नीति, 1991 को एक खुली औद्योगिक नीति की संज्ञा दी है। इसमें अनेक आधारभूत परिवर्तन किये गये हैं। औद्योगिक लाईसेंसिंग, रजिस्ट्रेशन व्यवस्था तथा एकाधिकार का अधिकांश भाग समाप्त कर दिया गया है। विदेशी पूँजी के पर्याप्त स्वागत की नीति अपनायी गयी है, उपक्रम की भूमिका को पुनः परिभाषित किया गया तथा औद्योगिक स्थानीयकरण की नीति को पुनः तय किया गया है।

सरकार की नयी औद्योगिक नीति ने चीनी उद्योग को नयी दिशा प्रदान की है। यदि विदेशी पूँजी एवं तकनीक के आगमन पर सावधानी पूर्वक निगरानी रखी जाये, तो यह नीति भारतीय औद्योगिक अर्थव्यवस्था को आधुनिक कुशल

गुणवत्ता प्रदान और विश्व बाजार में प्रतियोगी बनाने में महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। इस प्रकार हम कह सकते है कि उत्तर प्रदेश के चीनी उद्योग की लाभप्रदता पर व्यापक प्रभाव पड़ा है, जिस कारण सरकार के राजस्व में भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। सरकारी नीतियों के कारण आज चानी उद्योग से अधिकांश लोग लाभ कमा रहे हैं, लेकिन उत्तर प्रदेश में इस उद्योग से जुड़े कृषकों की स्थिति काफी सोचनीय हो गयी है। परिणामस्वरूप विगत वर्षों में कृषकों का इस प्रकार फसल के प्रति मोह भंग हुआ है।

उत्तर प्रदेश में गन्ना किसानों की समस्यायें हैं, चीनी मिलों की अपनी समस्याएँ हैं, चीनी मिलें बन्द हैं, जो चीनी मिलें चालू है उनमें अधिकांश घाटे में जा रही है, जिस कारण उत्तर प्रदेश सरकार को मिलने वाले राजस्व में कमी आ रही हैं। उत्तर प्रदेश में स्थापित सहकारी चीनी मिलों में अधिकांश घाटें में हैं उन्हें घाटे से उबारने के प्रयास किये जा रहे हैं, बन्द मिलों को पुनः प्रारम्भ करने की दृष्टि से उन्हें सरकार वित्तीय सुविधाएं प्रदान करें। यदि सम्भव हो तो उनका अन्य मिलों के साथ विलीनीकरण कर दिया जाये। प्राइवेट सेक्टर की चीनी मिलों को अनेकों सुविधाएं प्रदान की जा रही है। फिर भी इस उद्योग के उन्नयन के लिए अभी जो भी प्रयास किये जा रहे है वे अपना कोई प्रभाव दिखाने में असफल रहे है अतः उनके समाधान हेतु विचार करने के लिए उक्त सुझाव दिये जा सकते है ताकि चीनी मिलों की समस्याओं के साथ–साथ किसानों की समस्याओं को भी दूर किया जा सके और उत्तर प्रदेश सरकार के राजस्व में भी चीनी मिलें पर्याप्त योगदान कर सकने में सक्षम हो सकें।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


| क्रम | पुस्तक का नाम | लेखक |
|---|---|---|
| 1. | Indian Economics | Mamoria & Jain |
| 2. | General Industrial Management | Henry Feol |
| 3. | Business Economics & Business Environment | I.C. Dhingra |
| 4. | Industrial & Social Security | N. G. Abhayankar |
| 5. | अर्थशास्त्र के सिद्धन्त | डा0 जे0 सी0 पन्त |
| 6. | व्यवसायिक अर्थशास्त्र | डा0 सी0 वी0 गुप्ता |
| 7. | उद्योग एवं श्रम कल्याण | सक्सेना एवं सक्सेना |
| 8. | भारतीय अर्थव्यवस्था | रूद्र दत्त एवं सुन्दरम |
| 9. | आर्थिक विकास एवं नियोजन | एस0पी0सिहं |
| 10. | Sigarcane in India | S.V.Parthsarathy |
| 11. | Sugarcane | C.N.Babu |
| 12. | Financial performance of sugar industry | Dr.K.P.Mudgal |

## जर्नल एवं मैंगजीन


1. द कामर्स– मुम्बई
2. हिन्दुस्तान टाइम्स
3. योजना
4. इण्डिया टूडे
5. भारतीय चीनी पत्रिका, नई दिल्ली
6. सांख्यिकी पत्रिका, उत्तर प्रदेश सरकार